देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
Impact Factor 7.523
October 2023
Vol.-18, Issue-4(1)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

साहित्य में गांधी एवं गांधी का साहित्य विशेषांक

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. अमिता प्रकाश

सम्पादक :
डॉ. नरेश मिहाग
एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1	सम्पादकीय	डॉ. अमिता प्रकाश	08-10
2.	आधुनिक हिन्दी कविता पर गाँधी के वैचारिक दर्शन का प्रभाव	डॉ. अनिता जोशी	11-16
3.	गांधी के राम बनाम साहित्य के राम	बबीता दौरियाल	17-20
4.	महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन के प्रति ब्रिटिश सेवी वर्ग की मनोवृत्तिसर हरकोर्ट बटलर के विशेष सन्दर्भ में एक मनोवैश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. बीना जोशी	21-25
5.	प्रेमचंद के साहित्य में गाँधीवादी विचारधारा	डॉ० आशा हर्बोला	26-29
6.	गांधी और हिन्दी सिनेमा	डॉ. विद्या शंकर विभूति	30-34
7.	हिन्दी साहित्य में गांधी दर्शन की अप्रतिम अभिव्यक्ति	डॉ. हेमचन्द्र दुबे	35-37
8.	महात्मा गांधी जी के चलाये गये आन्दोलनों में महिलाओं की सहभागिता (कुमाऊ के परिपेक्ष्य में विशेष)	डॉ. कंचन वर्मा	38-41
9.	हिन्दी भाषा एवं साहित्य में गांधीवादी विचारधारा	डॉ. जगदीश चन्द्र जोशी	42-44
10.	हिन्दी कविता में महात्मा गांधी की विचारधारा का प्रभाव	डॉ. विक्रम सिंह	45-49
11.	प्रेमचंद के साहित्य में गांधीवादी विचारधारा	डॉ. ममता	50-53
12.	हिन्दी नाट्य साहित्य में गांधी दर्शन की अभिव्यक्ति	डॉ. प्रकाश कृष्णदेव धुमाल	54-61
13.	हिन्दी साहित्य में गाँधीवादी विचारधारा	पूजा	62-64
14.	हिन्दी साहित्य में गाँधी-दर्शन की अभिव्यक्ति	डॉ. अचला पाण्डेय	65-70
15.	हिन्दी साहित्य गाँधीवादी विचारधारा में	डॉ. शशि बाला रावत	71-73
16.	गाँधीवाद की प्रासंगिकता	प्रेमा	74-76
17.	गांधीवाद और हिंदी साहित्य	डॉ० संजीव सिंह नेगी	77-82
18.	आधुनिक हिन्दी-साहित्य पर गाँधीवाद का प्रभाव	डॉ. कृष्णा	83-87
19.	गाँधी और हिन्दी साहित्य	प्रो० चंद्रा खत्री	88-96
20.	गांधी चिंतन व प्रेमचंद का उपन्यास साहित्य	डॉ. मीनाक्षी राणा	97-100
21.	गांधी दर्शन : एक समग्र मूल्यांकन	प्रो. रेनू प्रकाश	101-105
22.	हिंदी नाट्य साहित्य में गांधीवादी दर्शन का प्रभाव, प्रसाद एवं प्रसादोत्तर सामाजिक नाटकों के विशेष संदर्भ में	डॉ. जयश्री भंडारी	106-112
23.	आधुनिक संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना एवं संस्कृत वांग्मय में महात्मा गांधी	डॉ० शालिनी पाठक	113-118
24.	गाँधी और राष्ट्र भाषा हिंदी	डॉ. तजिंदर भाटिया	119-122
25.	नागार्जुन के काव्य में गांधी दर्शन	डा० नेहा भाकुनी	123-129
26.	गांधीवाद की प्रासंगिकता	राघवेन्द्र सिंह	130-133
27.	हिंदी साहित्य में गांधी दर्शन	डॉ. भावना	134-137
28.	गांधी जी का शैक्षिक दर्शन	मनोज भाकुनी, डॉ. शिव भोलेनाथ श्रीवास्तव	138-142
29.	गाँधी का राष्ट्रवाद	दुर्गेश नंदिनी	143-146

30.	हिंदी साहित्य में गाँधीवादी विचारधारा	डॉ. सुनीता राठौर	147-151
31.	हिन्दी नाटक में गाँधी चिंतन	डॉ रश्मि रवीन्द्रन	152-155
32.	हिंदी दलित कविता में गाँधी व अम्बेडकर की वैचारिक दृष्टि	डॉ० गोपाल राम	156-163
33.	मैथिलीशरण गुप्त रचित 'पंचवटी' में व्यक्त गाँधी विचारधारा	प्रो. रिद्दि पी. तलाविया	164-167
34.	हिन्दी साहित्य में गांधीवादी विचारधारा	डॉ. बबीता गुप्ता	168-170
35.	साहित्य में चित्रित गाँधी जी के विभिन्न सिद्दान्त	डॉ. सुधा देवी दीक्षित	171-176
36.	गाँधीवाद से प्रभावित आधुनिक हिंदी साहित्य	कु. सपना	177-180
37.	किसानों का मसीहा गाँधी-चंपारण किसान आंदोलन के संदर्भ में	अन्नपूर्णा भोसले	181-183
38.	गांधी का चिंतन : प्राचीनता से समन्वय और आधुनिकता का प्रकटीकरण	डॉ. शैलेन्द्र तिवारी	184-190
39.	गाँधीवाद की वर्तमान समय में प्रासंगिकता	श्री भूपेन्द्र सिंह	191-193
40.	गांधी बनाम प्रेमचंद	डॉ. सीमा कुमारी	194-199
41.	साहित्य में गांधी एवं गांधी का साहित्य	विजय पाटिल	200-201
42.	प्रेमचंद के उपन्यास 'निर्मला' में गांधीवाद	डॉ. आलपाटि भानु प्रसाद	202-204
43.	आधुनिक हिन्दी साहित्य में महात्मा गांधी की जीवनी एक अद्भुत विश्लेषण	कर्रा पृथ्वी	205-208
44.	हिन्दी साहित्य में गांधीवादी विचारधारा	डॉ. सरोज बाला श्याम	209-213
45.	गांधी जी का चरित्र के बिना ज्ञान	डॉ. सुशील चन्द्र बहुगुणा	214-218
46.	हिंदी साहित्य में गांधी विचारधारा का प्रभाव	डॉ सीताराम आठिया	219-222
47.	वर्तमान समय में गांधीवाद की प्रासंगिकता	श्रीमती कांता वर्मा	223-226
48.	'टेढ़े-मेढ़े रास्ते' उपन्यास में गाँधीवादी विचारधारा	डॉ. जिनु जॉन	227-230
49.	'बा' उपन्यास में गांधी विचार	श्रुतिमफत भाई पटेल	231-233
50.	गाँधीवाद की प्रासंगिकता	अनीता दानू	234-237
51.	महात्मा गांधी का परिचय व गांधीवादी की प्रासंगिकता	डॉ. पूजा चौहान	238-242
52.	गाँधीवाद एवं हिन्दी साहित्य	डॉ. सुशील बिलुँग	243-247
53.	गांधी से प्रभावित आधुनिक हिंदी साहित्य	काकर मुत्यालराव	248-250
54.	गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता : एक समाजशास्त्रीनय विश्लेलषण	शैलजा, प्रो0 (डॉ.) रेनू प्रकाश	251-255
55.	हिन्दी साहित्य और गाँधी दर्शन	डॉ. संतोष कुमार लिल्हारे	256-260
56.	रमेशचन्द्र शाह का रचनाकर्म : एक सूक्ष्म अवलोकन	डॉ० कुसुम लता	261-264
57.	हिंदी उपन्यासों में चित्रित गाँधी आंदोलन	निशा साहू	265-269
58.	GANDHI'S VISION OF NATIONAL LANGUAGE	Dr. Anshu Puri	270-274
59.	Gandhi : The Harbinger of Cleanliness	Dr. Subhash	275-278
60.	Human Right and Mahatma Gandhi	Dr. Pankaj Pandey	279-284
61.	महात्मा गांधी के विचारों का शांति एवं सुरक्षा पर प्रभाव	डॉ. रामतिवारी	285-290

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
October 2023
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLI
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

गांधी दर्शन : एक समग्र मूल्यांकन

प्रो. रेनू प्रकाश

आचार्य समाजशास्त्र विभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, उत्तराखंड।

सामाजिक विचारकों की यदि हम बात करें, तो भारतीय संस्कृति, परम्परायें एवं मूल्यों में महात्मा के विचारों एवं दर्शन को नकारा नहीं जा सकता। भारतीय दर्शन एवं भारतीय सामाजिक व्यवस्था को रखने वाले विचारों में गाँधी जी के चिंतन का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यदि गाँधी जी के लेख एवं उनके विचारों की अभिव्यक्तियों की आज अव्यवस्थित होने वाले समाज आवश्यकता है। महात्मा गांधी जी के विचारों एवं लेखनी के अनुरूप उन्हें एक सामाजिक विचारक सकता है। जिन्होंने तात्कालीन समाज तथा भविष्य दोनों को ध्यान में रखकर अपने विचारों के माध्य दिशा निर्धारण देने में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। यह सत्य है कि गाँधी दर्शन नैतिकता, परोपकार, सेवा भाव एवं सम्पूर्ण मानव कल्याण जीवन पद्धति पर आधारित है। गाँधी जी सम्पू में आर्थिक समानता के पक्षधर थे। आपका मानना था कि जब तक समाज में आर्थिक विषमता रहेगी समाज विकास की दिशा की ओर अग्रसर नहीं हो सकता। अतः सर्वप्रथम हमें समाज में फैली आर्थिक अ को दूर करना होगा। जिसके लिए गाँधी जी ने ट्रस्टीशिप सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। गाँधी दर्शन या को समझने के लिए आवश्यक है कि उनके चिंतन को क्रमबद्ध तरीके से समझा जाये। यह आलेख गाँ का एक समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत करता है जो समाज में व्याप्त किसी भी समस्या के समाधान को प्रस में सक्षम हो सकता है।

धर्म :-

गाँधी जी ने धर्म की व्याख्या आत्मज्ञान के सन्दर्भ में की है। गाँधी जी का मानना था कि सब है और सभी धर्मों का एकमात्र लक्ष्य "सत्य" को प्राप्त करना होता है। गाँधी जी अनुसार कोई भी धर्म न होता है और ना ही अन्तिम, यही कारण है कि धर्म परिवर्तन को गाँधी जी ने कभी भी उचित नहीं मान चूंकि अलग–अलग समूहों या समुदायों में बंटा होता है, अतः प्रत्येक की संस्कृतिक परिस्थितियां भिन्न के कारण धार्मिक क्रियाकलाप भी भिन्न–भिन्न हो सकते हैं, किन्तु अन्त में लक्ष्य सबका समाज होता जी का मानना है, कि "एक ईसाई को एक हिन्दू बनाने का या एक हिन्दू को एक ईसाई बनाने का प्र करना चाहिए? यदि एक हिन्दू एक अच्छा और ईश्वर प्रिय व्यक्ति है तो एक ईसाई को उससे सन्तुष्ट हो जाना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति के आचार–विचार से धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं है तो केवल एक स्थ या मन्दिर में विशेष रूप से उपासना करना एक खोखली बात है। व्यक्तिगत तथा सामाजिक विकास में

भी हो सकता है।"[1]

गाँधी जी के अनुसार "समाज में से धर्म को निकाल फेंकने का प्रयत्न बाँझ के घर पुत्र पैदा करना जितना ही निष्फल है और अगर कहीं वह सफल हो जाए तो समाज का उसमें नाश है। धर्म के रूपान्तरण हो सकते है। उनमें रहे प्रत्यक्ष अंधविश्वास, सडन और अपूर्णताएं दूर हो सकती हैं, हुई हैं और होती रहेंगी, मगर धर्म तो जब तक जगत है तब तक चलता ही रहेगा क्योंकि जगत का धर्म ही एक आधार है, धर्म की अन्तिम व्याख्या है ईश्वर का कानून।"[2]

अहिंसा :-

गाँधी जी का मानना था कि प्रजातांत्रिक समाज में सामाजिक व्यवस्था को सुसंगठित बनाये रखने में अहिंसा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है, हिंसक प्रवृत्ति वाले समाज का अस्तित्व बहुत लम्बे समय तक नहीं माना जा सकता। गाँधी जी के अनुसार "सच्चा प्रजातंत्र या जनता के स्वराज्य की प्राप्ति में असत्य तथा हिंसात्मक साधनों के प्रयोग का अर्थ है– विरोधियों को कुचलना या उनका सम्पूर्ण नाश करना। इससे व्यक्तिगत स्वतंत्रता नहीं रह जाएगी। व्यक्तिगत स्वतंत्रता की पूर्ण प्राप्ति तो केवल एक अमिश्रित अहिंसा के राज्यों में ही हो सकती है।

सत्याग्रह :-

सत्याग्रह के शाब्दिक अर्थ को यदि समझा जाये, तो सत्य के लिए आग्रह करना। इस सन्दर्भ में श्रीमननारायण ने लिखा है कि, "सत्याग्रह की बुनियाद थी साधन–शुद्धि"। इस सन्दर्भ में गाँधी जी का मानना था कि जब तक साधन शुद्ध नहीं होंगे तब तक हम वांछित साधन को प्राप्त कर ही नहीं सकते। स्वराज्य को पुनः प्राप्त करने के लिए गाँधी जी ने हिंसापूर्ण उपायों को कभी भी उचित नहीं ठहराया। गाँधी जी इस तथ्य को स्पष्ट रूप से स्वीकार करते थे कि हिंसापूर्ण उपायों से कभी भी ना तो हम अंग्रेजी सत्ता का सामना कर सकते हैं और ना ही स्वतंत्रता की प्राप्ति कर सकते हैं।

गाँधी जी के अनुसार "प्रतिपक्षी का बुरा चाहना या हानि पहुंचाने के इरादे से उससे या उसके बारे में बुरा बोलना सत्याग्रह का उल्लंघन है। उसमें शोरगुल, प्रदर्शन या उतावलापन नहीं होता। सत्याग्रह एक सौम्य अस्त्र है। वह किसी को चोट नहीं पहुंचाता है।"[3]

श्रीमन्नानारायण ने भी उक्त कथन को समर्थन प्रदान करते हुए माना है कि "हमें यह भी समझ लेना चाहिए कि "सत्याग्रह" और पश्चिम के देशों की "पैसिव रैजिस्टेन्स" क्रिया में एक मूलभूत अंतर है–दूसरी पद्धति कमजोरों का शस्त्र है और उसमें शारीरिक शक्ति या हिंसा का निषेध नहीं हो सकता। सत्याग्रह का उद्देश्य रचनात्मक है। उसमें कायरता की तनिक भी झलक नहीं रह सकती।"[4]

सर्वोदय :-

गाँधी जी एक आदर्श समाज तथा शोषण मुक्त व्यवस्थित समाज के पक्षधर थे। सर्वोदय विचारधारा उन्हें रस्किन की पुस्तक "अन्टू दिस लास्ट" से प्राप्त हुई, उनके मित्र द्वारा 1904 में जोहान्सबर्ग से बर्न की यात्रा में भेट की गई इस पुस्तक ने गाँधी जी की विचारधारा को एक नयी दिशा देने का कार्य किया, इस पुस्तक ने उनके मस्तिष्क पर एक गहरा प्रभाव छोड़ा। गाँधी जी ने "अनटू दिस लास्ट" का अनुवाद गुजराती भाषा में किया और उसका नाम सर्वोदय रखा। इस पुस्तक में स्पष्ट रूप से गाँधी जी ने अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए लिखा

है कि जो भी चीज मेरे भीतर छिपी हुई थी उसकी छाया या प्रतिबिम्ब मैंने रस्किन की पुस्तक में

गाँधी जी के अनुसार "पहली चीज मैं जानता था, दूसरी को मैं धुंधले रूप में देखता था,
कभी विचार ही नहीं किया था। सर्वोदय ने मुझे दिन की तरह दिखा दिया कि पहली ही दो में
समाई हुई है।"

गाँधी जी के अनुसार भारत में सर्वोदय का अर्थ सबके उदय अथवा सबके विकास से
"सर्वोदय शब्द भले ही नया हो किन्तु उसका अर्थ सबके जीवन का साथ–साथ विकास ही इसका
का अर्थ है सबका विकास, उन्नति या सह विकास, परन्तु प्राचीन काल में अभ्युदय शब्द का प्रयोग
वैभव के अर्थ तक सीमित था, इसलिए गाँधी जी ने केवल उदय शब्द का प्रयोग किया, एक
से सबका उदय ही यही सर्वोदय का उद्देश्य है।

गाँधी जी हमेशा मानते थे कि –"मनुष्य का मन चंचल है। इसे, जैसे–जैसे ज्यादा दे
वैसे–वैसे ज्यादा मांगता है। ज्यादा लेकर भी वह सुखी नहीं होता क्योंकि भोग भोगने से इच्छा
क्योंकि सुख और दुःख तो मन के कारण है।" सर्वोदय की भावना सभी व्यक्तियों के सुख में
सर्वोदय में सभी व्यक्तियों के सुख–शान्ति की भावना छुपी हुई है–"सर्वोदय ऐसे वर्ग–विहीन, जाति
शोषण विहीन समाज की स्थापना करना चाहता है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति और समूह को अपने सर्वां
के साधन और अवसर मिलेंगे, यह क्रान्ति अहिंसा और सत्य द्वारा ही सम्भव है। सर्वोदय इसी का
करता है।"

संरक्षता का सिद्धान्त :-

गाँधी जी सम्पूर्ण समाज में आर्थिक समानता लाना चाहते थे, उनका प्रमुख ध्येय समाज
विषमता को समाप्त करना था। अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए गाँधी जी ने संरक्षता या ट्रस्टीशिप
का प्रतिपादन किया। इस सिद्धान्त के अनुसार "समाज के प्रत्येक वर्ग को अपनी आवश्यकताओं की
रूप से प्राप्त होनी चाहिये। ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त इस बात पर आधारित है कि जिसके पास धन
फिजूल व्यय ना करे। उस धन को थाती समझकर रखे और लोककल्याण में खर्च करे। जब तक
शिक्षा से अपना धन त्याग नहीं देता अथवा उसे जनता की अमानत समझकर खर्च नहीं करता
अहिंसात्मक क्रान्ति अनिवार्य है।"

गाँधी जी का मानना था कि अपनी आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संचय, प्रकृति के नियमों
है, क्योंकि प्रकृति भी प्रत्येक दिन उतना ही उत्पन्न करती है जितनी कि मनुष्य की आवश्यकतायें होती
वस्तुओं का भविष्य के लिए संचय करना फिजूल है। गाँधी जी के अनुसार– "प्रत्येक व्यक्ति को धन का
कभी नहीं करना चाहिए बल्कि ट्रस्टी की तरह आवश्यकता से अधिक धन को जन समुदाय या लो
के लिए खर्च करें।"

समाज को व्यवस्थित रखने के लिए जिस प्रकार परिवार का निर्माण होता है और प्रत्येक व्य
के प्रत्येक सदस्य के सुख–दुख और आवश्यकताओं का ध्यान रखकर अपनाजीवन यापन करते हैं
सदस्य द्वारा अर्जित धन का उपभोग परिवार का प्रत्येक सदस्य करता है, उसी प्रकार गांधी जी भी
को एक परिवार की संज्ञा देते थे। उनका मानना था कि "समाज को एक वृहद परिवार की त

आवश्यकतानुसार धन को स्वयं पर खर्च करके शेष धन समाज के अन्य लोगों को समर्पित करना ही बुद्धिमत्ता है। तभी धन और गरीब के मध्य आर्थिक असमानताओं को खत्म किया जा सकता है।"[10]

अपने "संरक्षता के सिद्धान्त" को स्पष्ट करते हुए 'हरिजन सेवक' में गाँधी जी ने लिखा था कि "मान लीजिए कि विरासत के या उद्योग–व्यवसाय के द्वारा मुझे काफी बड़ी सम्पत्ति मिल गई, तब मुझे यह जानना चाहिए कि वह सब सम्पत्ति मेरी नहीं। बल्कि मेरा तो उस पर इतना ही अधिकार है कि जिस तरह दूसरे लाखों आदमी गुजर करते हैं, उसी तरह मैं भी गुजर करूं। मेरी शेष सम्पत्ति राष्ट्र का अधिकार है और उसी के हित के लिए उपयोग होना आवश्यक है।"[11]

अर्थशास्त्री कुमारप्पा गाँधीवादी विचारधारा के अनुयायी थे।उनका मानना था किसमाजवाद और गाँधीवाद एक एक दूसरे से भिन्न नहीं थे, और न ही उनमें कोई अन्तर स्पष्ट होता है। गाँधी जी मानना था कि हम पूंजीपति को या पूंजीवादी को नष्ट नहीं करना चाहते बल्कि एक संरक्षक की तरह उन्हें निमन्त्रित करते हैं।"[12] हिंसात्मक क्रान्ति या हिंसात्मक आचरण गाँधी जी ने कभी सही नहीं माना। आपका मानना था कि जो स्वयं को संरक्षक मानेगा वह दूसरों का शोषण करके कभी भी धन का संचय नहीं करेगा, कार्ल मार्क्स के समान गाँधी जी ने कभी पूंजीपतियों का विरोध नहीं किया।

"गाँधी और मार्क्स दोनों ने व्यक्तिगत सम्पत्ति की अधिकता का विरोध किया परन्तु दोनों ने अलग–अलग ढंग से इसका विरोध किया।"[13]

अस्पृश्यता :–

प्रकृति कभी भी जीवन में भेदभाव नहीं करती, समानता के आधार पर प्रत्येक मनुष्य को एक सुसभ्य जीवन जीने का अधिकार प्राप्त है। प्राचीन काल में समाज को सुव्यवस्थित रखने के उद्देश्य से वर्णव्यवस्था केवल कार्यात्मक विभाजन का आधार था, कि प्रत्येक मनुष्य अपनी रूचि तथा योग्यता के अनुसार अपने व्यवसाय का निर्धारण कर सके। कालांतर में यही वर्ण–व्यवस्था जातियों में परिवर्तित होने लगी और वर्ण व्यवस्था का विकृत रूप हमारे सामने दृष्टिगत होने लगा। साथ ही जातिगत आधार ने अस्पृश्यता को जन्म दिया। गाँधी जी सदैव अस्पृश्यता के विरोधी थे, गाँधी जी का मानना था कि जन्म के आधार पर हम किसी भी जाति को समाज में सबसे निचला स्थान नहीं दे सकते। गाँधी जी का मानना था कि "अस्पृश्यता की यह दयनीय जीर्ण शीर्ण भावना हमारे पूर्वजों के मस्तिष्क में उस समय पनपी होगी, जब उनका दृष्टिकोण अति संकुचित अवस्था से गुजर रहा होगा। यह तो एक प्रकार का अभिशाप है और जब तक यह अभिशाप हमारे साथ है तब तक हम भारत की इस पवित्र भूमि में अपने ही समाज के एक बड़े अंश को प्रत्येक प्रकार से दुख कष्ट तथा अज्ञानता के अन्धकार में रखने का महापाप करते रहेंगे। किसी व्यक्ति को केवल पेशे के आधार पर अस्पृश्य समझा जाये, यह तो किसी भी रूप में युक्तियुक्त और तर्कसंगत नहीं है।"[14]

शिक्षा :–

गाँधी जी समाज के विकास और प्रगति के लिए शिक्षा को एक महत्वपूर्ण अभिकरण मानते थे। गाँधी जी के अनुसार शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य केवल साक्षर बनाना ही नहीं वरन् इससे नैतिकता, चरित्र निर्माण व सामाजिक व आर्थिक विकास भी होना आवश्यक है। गाँधी के अनुसार, "शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जिससे ज्ञान के साथ–साथ आय के अर्जन तथा रोजगार की प्राप्ति भी हो सके। शिक्षा ऐसी हो जो बच्चों में गुण तथा संस्कारों का विकास

करे और उन्हें ज्ञानवान बनाकर रोजगार भी प्रदान करें।"[15]

निष्कर्ष :-

सम्पूर्ण शोध आलेख के सक्षप्तीकरण के आधार पर यह स्पष्ट है कि गाँधी जी के विचार वास्तव में विचारधारा का समर्थन करते हैं। समाज के विकास, घटनाएं, समस्याएं तथा समाज के विकास को निर्धारित करने वाले ज्वलंत मुद्दों पर जिस प्रकार गाँधी जी की विचारधारा है, वह आज के समकालीन अव्यवस्थित हो रहे समाज के लिए भी अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। समग्र मूल्यांकन के आधार पर यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा कि समाज का चाहे कोई भी परिप्रेक्ष्य रहा हो – सामाजिक हो, राजनैतिक हो, आर्थिक हो, नैतिकता से सम्बन्धित हो अथवा धर्म या आध्यात्म से जुड़ा हो, प्रत्येक पर गाँधी जी ने अपने स्पष्ट विचारों को व्यक्त किया है। यह विचारधारा न केवल हमारे वैचारिक परिवर्तन के लिए आवश्यक है बल्कि एक योग्य नागरिक के रूप में अपने उत्तरदायित्वों के लिए हमें योग्य बनाती है। गाँधी जी का मानना था कि वही समाज या उसमें निवास करने वाले व्यक्ति अपना सर्वांगीण विकास कर सकते हैं, जिसमें वह स्वयं के विकास के साथ ही सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण की भावना भी रखता हो। वसुधैवकुटंबकम् की विचारधारा से ही हम अपनी तथा समाज की उन्नति में पूर्ण सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

सन्दर्भ :-

1. मुकर्जी रविन्द्रनाथ "सामाजिक विचारधारा– कॉम्ट से मुकर्जी तक"–2015 विवेक प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या 476
2. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या 476–477
3. उपरोक्त, पेज नम्बर 479
4. उपरोक्त, पेज नम्बर 481
5. उपरोक्त, पेज नम्बर 481 481
6. उपरोक्त, पेज नम्बर 481
7. मेरी आत्मकथा–"सत्य के प्रयोग" नवजीवन पब्लिशर्स, अहमदाबाद, पृष्ठ संख्या –22
8. दादा धर्माधिकारी "सर्वोदय दर्शन" सर्व सेवा संघ, प्रकाशन वाराणसी 1988, पृष्ठ संख्या –05
9. महात्मा गांधी "गांधी जी ने कहा था" सस्ता साहित्य मण्डल, 2009, पृष्ठ संख्या –07
10. मुकर्जी रविन्द्रनाथ "सामाजिक विचारधारा– कॉम्ट से मुकर्जी तक"–2015 विवेक प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 484
11. मोहनदास करमचंद्र गांधी "ट्रस्टीशिप संकलित रविंद्र के लेकर, नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद, 1960 पृ
12. मुकर्जी रविन्द्रनाथ "सामाजिक विचारधारा– कॉम्ट से मुकर्जी तक"–2015 विवेक प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या–486
13. मोहनदास करमचंद गांधी "ट्रस्टीशिप" संकलित रविंद्र केलेकर नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद 1960 पृष्ठ संख्या–92
14. मुकर्जी रविन्द्रनाथ "सामाजिक विचारधारा– कॉम्ट से मुकर्जी तक"–2015 विवेक प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या–490
15. सिंह रामजी, गांधी दर्शन मीमांसा, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, बिहार–1986, पृष्ठ संख्या– 252

email id- rprakash@...

PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

डॉ. अमिता प्रकाश

कृतियां -

रंगों की तलाश (कहानी संग्रह)

पहाड़ के बादल (कहानी संग्रह)

पंकज बिष्ट का आधुनिक भावबोध (शोध ग्रंथ)

आवाज रोशनी है (संस्मरण)

देश विदेश की विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में कहानी, कविता एवं शोध आलेखों का प्रकाशन।

पुस्तक संपादन -

"Environmental Education for Social Sustainability" 2015, Ed. Dr. Prem Prakash, Dr. Amita Prakash & Narendra Kumar Singh, Adhyayan Publishers and Distributors, New Delhi, ISBN : 978-81-8435-468-3.

सामाजिक पर्यावरण चिन्तन एवं विमर्श- संपादक डॉ0 अमिता प्रकाश एवं डॉ0 रेनू प्रकाश, अध्ययन पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2015, ISBN : 978-81-8435-471-3

Ecological Ignorance in Development Raising Disastrous Possibilities" 2017, Ed. Dr. Prem Prakash, Narendra Kumar Singh & Dr. Amita Prakash, Anamika Publishers & Distributors, New Delhi, ISBN : 978-81-7975-894-6.

सम्मान :-

- कथा भूषण सम्मान राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास, गाजियाबाद-2017
- कथा शिरोमणि, साहित्य शारदा मंच, खटीमा उधमसिंह नगर, उत्तराखंड-2018
- हिंदी गौरव सम्मान अंतरराष्ट्रीय, हिंदी परिषद, आधारशिला विश्व हिंदी मिशन-2019
- विद्योत्तमा साहित्य सेवी सम्मान, विद्योत्तमा फाउंडेशन, नासिक-2022
- शोधश्री सम्मान, गीना प्रकाशन, भिवानी, हरियाणा-2022
- चौधरी गिरधारीलाल घासीराम सिहाग स्मृति सम्मान, भिवानी, हरियाणा-2023

संप्रति -

असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी,

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोमेश्वर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुगनराम सोसायटी रजि. के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्ज, भिवानी से छपवाकर गीना प्रकाशन, 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड भिवानी-127021 (हरि.) से वितरित की।

ISSN 2395 7115